प्रेस नोट / प्रकाशनार्थ 18-04-2015

आज दिनांक 18-04-2015 को आल इंडिया कोन्फेरेंस ऑफ इंटीलिक्चुअल तथा मर्चेंट्स चैम्बर उत्तर प्रदेश, कानपुर के संयुक्त तत्वाधान में **"भूमि अधिग्रहण बिल -2015 : आवश्यकता या राजनीति"** पर एक गोष्ठी का आयोजन मर्चेंट्स चैम्बर में हुआ जिसकी अध्यछता डॉ. एम.पी. अग्रवाल ने की । मुख्य अतिथि विधयाक श्री सत्यदेव पचौरी रहे तथा संचालन श्री रजनीश प्रकश त्यागी ने किया । वक्ताओं में मुख्य वक्ता डॉ. आर.के.पाण्डेय - विभागाध्यक्ष वी.एस.एस.डी. ला कॉलिज तथा डॉ. बी.आर. सिंह अग्रावाल- प्राचार्य: जुहारी देवी गर्ल्स डिग्री कॉलिज, श्री आर.जी. पाण्डेय (वकील), श्री एस.ऍन. बाजपेयी(से.नि. केस्को), श्री सुरेश गुप्ता तथा डॉ. इन्द्र मोहन रोहतगी, अध्यछ, मर्चेंट्स चैम्बर उतर प्रदेश उपस्थित थे ।

"विकास के लिए अधिग्रहण आवश्यक, आवश्यकता है कानून के सही निष्पादन की"

(1) लोकतंत्र में स्वस्थ विरोध आवश्यक परन्तु पूर्वाग्रह से सिर्फ विरोध नहीं होना चाहिए । लोक सभा या राज्य सभा में चर्चा होनी चाहिए ।

(2) कानून समय व आवश्यकतानुसार बदलते रहे है बदलते रहेंगे । नियमो के दुरूपयोग पर सख्ती आवश्यक / संशोधन आवष्यकता ।

(3) चीन की प्रगति पर खुलकर चर्चा हुई । किसानो का पछ भी आवश्यक ।

(4) किसानो का संरछन है । पहले से लगातार बेहतर हुआ है ।

(5) मुआवजे के सदुपयोग के लिए किसान को ट्रेनिंग व कमिटी की जरुरत ।

डॉ. आर. के पाण्डेय, मुख्य वक्ता, ने कहा भूमी हमेशा शाशन की रही है । 1894 से सभी संसोधनो में चर्चा करते हुए 1994 के, 2003 के संसोधनो की तुलना की । उन्होंने कहा यह बिल 2013 का ही उसमे कुछ संसोधन लिए गए है जिसमे किसान को दाम (rate)का 4 गुना देना सुनिश्चित किया गया है । 80% लोगो की सहमती समाप्त कर दी गयी है तथा प्राइवेट पार्टी का अधिग्रहण समाप्त कर दिया गया है । रछा के प्रोजेक्ट में आवश्यकता ।

श्री एस. ऍन. पचौरी ने कहा की गड़बड़ी कानून के क्रियान्वन में है । भारत की प्रगति के लिए अधिग्रहण आवश्यक / विरोध सिर्फ राजनितिक - विरोध / कोई भी सरकार जनता का कोपभाजन नही होना चाहती । राष्ट्र हित में सहयोग करे ।

आगुन्तको में श्री. एस.सी. त्रिपाठी(परिवर्तन), श्री जागेश दीछित, श्री ए. के. सिन्हा, श्री एन.के .शुक्ला, डॉ. अग्निहोत्री, श्री जी.के.पाण्डेय(अधिवक्ता) आदि थे ।

अधिग्रण पर खुल कर चर्चा हुई, राष्ट्र हित में राजनीति से दूर रहे विपछ ।

धन्यवाद.